सितम्बर २०१३
कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

अनुक्रमणिका

ज्ञानी कहते हैं... ०३

यह तो नई ही बात! ०४

म्यूज़िक कॉम्पिटिशन ०६

मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर ११

अपने आप को परखकर देखो! १५

ऐतिहासिक गौरवगाथा १७

मीठी यादें १९

राखी के त्यौहार के फोटो २०

अक्रम एक्सप्रेस

मैं रह गई!

संपादकीय

बालमित्रो,

बहुत कुछ होते हुए भी, उसमें संतोष रखने के बजाय जो नहीं है उसके लिए रोना, शिकायतें करना, यह मनुष्य का सहज स्वभाव हो गया है। खुद को नहीं मिले या दूसरे से कम मिले वह हमें सहन नहीं होता और परिणाम स्वरूप "मैं रह गई" हो जाता है और बचता है सिर्फ दुःख, दुःख और दुःख ही।

ऐसी कोई तो समझ होगी ही न, जिससे हम कम्पेरिज़न करके मोल लिए दुःखों से मुक्त हो सकें?

हाँ, परम पूज्य दादाश्री ने इस विषय पर सुंदर विवेचना की है। कौन-सी पॉज़िटिव समझ से हम कम्पेरिज़न में न पड़े और जो है उसीमें आनंद से रह सकें और दूसरे को कुछ भी मिले, तब हम दुःखी न हों, उसकी समझ प्रेक्टिकल उदाहरणों द्वारा दी गई है।

तो आइए, हम भी इस समझ को प्राप्त करें और दुःखों से मुक्त रहें।

-डिम्पल महेता

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ६
अखंड क्रमांक : ६
सितम्बर २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

दीपकभाई : "मैं रह गई" और "उसे सबकुछ मिला" ऐसे झगड़े बचपन से ही शुरू हो जाते हैं, भाई-बहन के बीच में, दो बहनों के बीच में।

"उसके पास अच्छे खिलौने हैं, मेरे पास क्यों नहीं", "दूसरों को मुझ से ज्यादा मिला और मुझे कम" यह सब कम्पेरिज़न करके हम दुःखी होते रहते हैं। उसके पीछे ऐसा अहंकार होता है कि मैं दूसरों से अलग हूँ, विशेष हूँ, मुझे खास मानो, बड़ा मानो। मेरे पास सभी लोगों से अच्छा होना चाहिए। कम्पेरिज़न करनी ही है तो अच्छी बातों के लिए क्यों नहीं करते! दुनिया में कितने लोग दुःखी होंगे, उनसे तो सुखी हैं न हम।

प्रश्नकर्ता : ऐसे कम्पेयर करेंगे तो फिर हम आगे ही नहीं बढ़ सकेंगे न?

दीपकभाई : नहीं, यही कम्पेयर करना चाहिए। जब बैचेन हो जाओ, तब देखना है कि ओहोहो! दुनिया में अरबों लोग दुःखी हैं, मैं तो कितना भाग्यशाली हूँ! ऐसे पॉज़िटिव बनो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे नहीं मिला, उसका तो मुझे दुःख रहता ही है। जैसे ही पता चला कि इन लोगों को जाने को मिल रहा है और मुझे नहीं, तो तुरंत ही ऐसा मन में लगता है कि मेरा नाम क्यों नहीं आया? अतः मेरे साथ अन्याय किया है, ऐसा ही लगता है।

दीपकभाई : ऐसा लगता है कि "मैं रह गई, मैं रह गई।" इसमें गलती कहाँ होती है कि हमें कम्पेरिज़न होने लगता है, उन लोगों को लिया और मुझे नहीं, उन्हें मिला और मुझे नहीं। तुम्हें कितनी बार कुछ ऐसे चान्स मिले होंगे तब क्यों नहीं लगता कि उन लोगों को तो नहीं मिला और वे लोग तो रह गए इसलिए उन लोगों को दो और मुझे कम मिलेगा तो चलेगा। नोबिलिटि तो होनी चाहिए न अपनी! कितनी संकुचितता है कि "मुझे ही मिले, सबसे अच्छा मुझे मिले।" फिर स्पर्धा शुरू हो जाती है, उसमें से जेलसी होती है, फिर नेगेटिविटी शुरू हो जाती है और फिर वह बैरभाव तक पहुँच जाती है।

अपने खुद के ही पाप-पुण्य के हिसाब से व्यवहार आता है, कोई भेज़ता नहीं है इसलिए हमें दूसरों को दुःख नहीं देना चाहिए। ऐसी संकुचितता से तो हम खुद का ही नुकसान करते हैं। हम कहते हैं न कि, "मैं जाऊँगा और तुम्हें नहीं जाने दूँगा।" तो कुदरत कहेगी "पहले मैं जाऊँगा और तुम्हें नहीं जाने दूँगा।" हमें जो कुछ भी मिलता है वह हमारे हिसाब के अनुसार ही मिलता है। नोबिलिटि तो होनी चाहिए न कि हमें नहीं मिला लेकिन किसी और को तो मिला, और उन्हें मिला तो उसका हमें आनंद होना चाहिए कि, भाई, उन लोगों को लाभ मिला न, अच्छा है, बुहत अच्छा है। वे लोग आगे बढ़ेंगे तो वह मेरे ही आगे बढ़ने के बराबर हैं।

यह तो नई

"मैं रह गई" वह संकुचितता है और "अच्छा हुआ, इन लोगों को मिला" वह नोबिलिटि है।

"मैं रह गई" के पीछे ईर्ष्या, स्पर्धा, आक्षेप, अहंकार, बुद्धि - सभी दोष खड़े हो जाते हैं।

"मैं रह गई" लगा कि तुरंत ही जिसे मिला हो और जिसने दिया हो उनके दोष दिखने शुरू हो जाते हैं कि वे चोर हैं, लुच्चे हैं, पक्षपाती हैं आदि और जब हमें मिला हो तब!!!

ही बात !

जैसे-जैसे इच्छाएँ कम होती जाती हैं, वैसे-वैसे सबकुछ सामने से आ मिलता है। जिसे कुछ भी नहीं चाहिए उसे सबकुछ मिलता है, ऐसा नियम है।

बराबरीवाले व्यक्ति के साथ कम्पेरिज़न होता है। क्या दादा के साथ होता है? "नहीं, वे तो बहुत आगे हैं, वहाँ हम पहुँच ही नहीं पाएँगे न!" जैसे कि कार चलानेवाले को कार चलानेवाले के साथ ही स्पर्धा होती है, ट्रक के साथ नहीं।

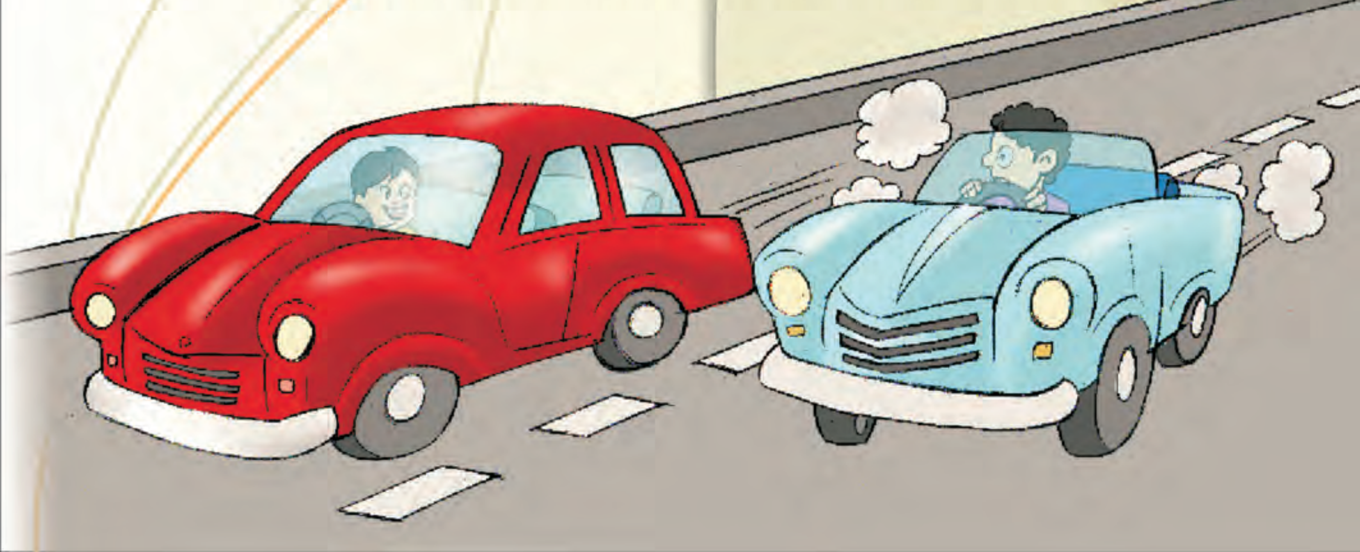

म्यूज़िक कॉम्पिटिशन

"देखो, व्योमा का केक मेरे केक से बड़ा है!" शैली ने मम्मी को स्केल दिखाते हुए कहा।

"मैं नहीं चलाऊँगी" दोनों हाथ डाइनिंग टेबल पर पटकते हुए, शैली बोली।

"अब वापस क्या हुआ?" पापा चिढ़कर बोले।

आँखें सिकोड़कर शैली ने कंपास से स्केल निकालकर व्योमा के केक का पीस नापा ओर अपने केक को नापा।

"देखो, व्योमा का केक मेरे केक से बड़ा है!" शैली ने मम्मी को स्केल दिखाते हुए कहा।

"तू कभी नहीं सुधरेगी!" ऐसा कहकर पापा खाना खाने लगे, लेकिन शैली की हर एक बात में कम्पेरिज़न की आदत से उसकी मम्मी बहुत परेशान हो गई थीं।

"शैली, अगर तुमने सिर्फ अपनी ही प्लेट में इतना केक का पीस देखा होता, तो तुम मुझसे क्या कहतीं, पता है?" मम्मी ने समझाते हुए पूछा।

"क्या?" शैली ने पूछा।

तुम मुझे "थैंक्स यू" कहतीं, लेकिन कम्पेयर करने से तुम्हें यह पीस छोटा लग रहा है। तुम्हें जो मिला है उसीमें खुश रहना सीखो। समझ में आता है न तुम्हें?

मम्मी की बात का जवाब दिए बगैर चुपचाप खाना खाकर शैली अपने रूम में चली गई। दूसरे दिन म्यूज़िक शो के सिलेक्शन के लिए स्कूल में जल्दी पहुँचना था, इसलिए जल्दी-जल्दी होमवर्क

खत्म करके, बैग पैक करके वह सो गई।

शो के सिलेक्शन टेस्ट के लिए दूसरे दिन स्कूल में लड़कियाँ इकट्ठी हुई थीं। चंदना मैडम बारी-बारी से सबको बुला रहीं थीं। शैली का नाम पुकारने पर वह पूरे विश्वास से रूम में गई। जिस विश्वास के साथ वह रूम में गई थी उससे दुगने विश्वास के साथ टेस्ट खत्म करके वह बाहर निकली।

"टेस्ट कैसा रहा?" नूपुर ने आतुरता से पूछा।

"बहुत ही अच्छा।" हँसकर शैली बोली।

वैसे तो सभी फ्रेन्डस उसके ओवर कॉन्फिडेन्स से परिचित थे। इसलिए उसका जवाब सुनकर किसीको आश्चर्य नहीं हुआ। और वैसे भी शैली के ओवर कॉन्फिडेन्स का कारण था कि अब तक कभी भी ऐसा नहीं हुआ था कि किसी भी इवेन्ट में शैली का सिलेक्शन नहीं हुआ हो। स्पोर्ट हो या ड्रामा, म्यूज़िक हो या क्विज़ सभी में शैली सिलेक्ट होती ही थी।

सभी का टेस्ट लेने के बाद चंदना मैडम ने बाहर आकर बताया कि, "म्यूज़िक शो में कौन-कौन सिलेक्ट हुए हैं, वह एक हफ्ते के बाद घोषित किया जाएगा, उसके बाद रिहर्सल शुरू होगा।" लेकिन शैली और उसकी फ्रेन्ड्स को इंतज़ार करने की ज़रूरत ही कहाँ थी!

गुरुवार को रिसेस में सब कैन्टीन में बैठे थे, तभी नूपुर दौड़ती हुई आई और बोली, "सुनो, मेरे पास एक सीक्रिट समाचार है! मैं स्टाफ रूम में चंदना मैडम को बुक्स देने गई थी, वहाँ मैंने म्यूज़िक शो के सिलेक्शन की लिस्ट देखी।"

"सच? कौन-कौन सिलेक्ट हुआ है?" त्रिशा ने पूछा।

"एक मिनिट, मुझे याद करने दे।" कुर्सी खिंचकर बैठ गई और धीरे-धीरे नाम याद करके बोलने लगी,

"त्रिशा, नंदिनी, नीति, राधिका और.. और.." सस्पेन्स बढ़ाते हुए बोली "और..उत्सवी। इन सभी को कोरस के लिए सिलेक्शन हुआ है।" यह सुनकर शैली का सैन्डविच गले में ही अटक गया, एक घूंट पानी पीकर वह बोली "क्या?! मेरा नाम नहीं है?"

नूपुर उदास चेहरे से सिर हिलाकर "ना" बोली। शैली बैग उठाकर क्लास की ओर चलने लगी। वह क्लास में सिर पकड़कर बैठी थी, तभी नूपुर उसके पास आकर बैठी। टीचर को क्लास में आने में थोड़ी देर थी।

शैली के कंधे पर हाथ रखकर नूपुर बोली, "इसमें इतनी अपसेट क्यों होती है? तुझे तो कितनी बार ऐसे शो में भाग लेने का चान्स मिला है, जो दूसरे को कभी नहीं मिला। इस बार किसी और को मौका मिला है तो उनके लिए खुश हो न!"

नूपुर का हाथ हटाते हुए शैली बोली, "वे सभी स्कोप मुझे मेरी काबिलियत के कारण मिले थे। चंदना मैडम का सिलेक्शन कितना बेहूदा है। ऐसे लोगों को सिलेक्ट किया है कि जो सुर-ताल ही नहीं जानते।"

इस तरह, रिसेस के बाद एक भी क्लास में शैली का ध्यान पढ़ाई में नहीं लगा। कभी उसे चंदना मैडम पर गुस्सा आता तो कभी दूसरी लड़कियों से इर्षा होती। "इन लोगों को मौका मिला और मुझे नहीं

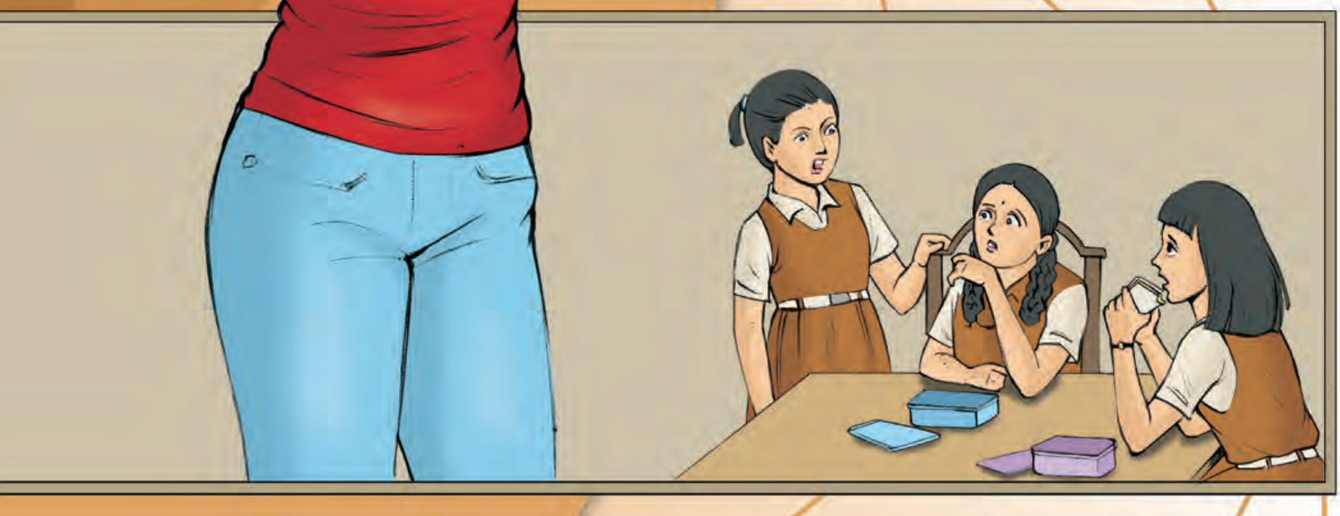

मिला, उन्हें लिया और मुझे नहीं लिया, मैं रह गई" बस इन्हीं विचारों की कुढ़न उसे परेशान कर रही थी।

घर पहुँचकर बैग सोफे पर फेंककर उसने व्योमा को आवाज़ लगाई, "व्योमा, मैं लेक की ओर जा रही हूँ। मम्मी आएँ तो कह देना।"

"अरे, पर अभी तो..." व्योमा अपनी बात पूरी करे इससे पहले तो शैली ने ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर दिया और लेक की ओर भाग गई।

पीछे से आकर नुपूर ने विचारों में खोई हुई शैली की आँखें बंद कीं। "प्लीज़ नूपुर, मैं अभी मज़ाक के मूड में नहीं हूँ", शैली चिढ़कर बोली।

"ओके, ओके रिलेक्स। मैं तो तेरे घर गई थी तो व्योमा ने बताया कि तू यहाँ बैठी है, तो मुझे लगा कि चक्कर लगाती आऊँ, सिलेक्शन को लेकर अभी भी अपसेट है?" नूपुर ने धीरे से पूछा।

"अफकॉर्स!" शैली तुनककर बोली और फिर अपने मन के विचार व्यक्त करते हुए उसने कहा, "कोरस ग्रुपवाले सभी लोग बीमार हो जाएँ और कोई गा ही न पाए, ऐसा होना चाहिए।"

यह सुनकर नूपुर बोली, "शैली, तू जैसा भाव करेगी, वैसा तुझे ही वापस मिलेगा। इसलिए ऐसे उल्टे भाव मत कर।"

थोड़ा सोचकर नूपुर ने शैली से पूछा, "तुझे अपने स्कूल का पहला ड्रामा याद है? तुझे किसान का रोल मिला था और त्रिशा डॉक्टर बनी थी?"

शैली ने जवाब दिया, "हाँ, याद है। उसमें मेरी एक्टिंग की सभी ने बहुत तारीफ़ की थी।"

"हाँ, तूने बहुत अच्छी एक्टिंग की थी लेकिन तू मुझे यह बता कि उस ड्रामा में तू ऐसा कम्पेरिज़न करके दुःखी हुई थी कि त्रिशा के पास स्टेथेस्कोप है और मेरे पास नहीं?" नूपुर ने गंभीरता से पूछा।

"कैसी बातें कर रही है तू। ऐसे कम्पेरिज़न मैं क्यों करूँ? मेरे रोल में स्टेथेस्कोप की ज़रूरत ही कहाँ थी? वह तो रोल के हिसाब से ही चीज़ें मिलती हैं न!" नूपुर के प्रश्न का जवाब देते हुए शैली ने कहा।

"हाँ, सही बात है, रोल के हिसाब से ही चीज़ें मिलती हैं। जैसे उस ड्रामा में रोल के हिसाब से चीज़ें मिली थीं, वैसे ही लाइफ में भी हमें हिसाब से ही सबकुछ मिलता है। उसमें कम्पेरिज़न करके दुःखी होने का सवाल ही कहाँ है? बल्कि जिसे भी मौका मिला है, तुम्हें तो उनके लिए खुश होना चाहिए।"

जैसे नूपुर की बात में शैली को बिल्कुल रुचि ही न हो, इस तरह एकटक वह लेक के सामने देख रही थी। थोड़ी देर बाद नूपुर ने कहा, "चल शैली, मैं जा रही हूँ, रात हो गई है। कल स्कूल में मिलते हैं।"

सवेरे शैली की खाँसी से व्योमा ऊठ गई।"इतनी ठंड में लेक के पास बैठी रहेगी तो खाँसी नहीं होगी तो क्या होगा!" आँखें मलते हुए व्योमा बोली।

मम्मी ने शैली को सिरप पिलाकर स्कूल भेज़ा लेकिन सिरप से खाँसी ठीक नहीं हुई। क्लासिस के दौरान उसकी खाँसी चलती ही रही। रिसेस के बाद नूपुर और शैली स्टाफरूम में चंदना मैडम की डेस्क पर बुक्स रखने गई। वहाँ शैली की नज़र लिस्ट पर पड़ी। वहाँ एक नहीं, दो पेपर थे।

एक पेपर पर लिखा था, "कोरस (ग्रुप में)" और दूसरे पर लिखा था "सोलो" (एक ही जन को प्रस्तुत करना)।

धक्का तो शैली को तब लगा कि जब उसने देखा कि मैडम ने "सोलो"वाले पेपर में शैली का नाम काटकर त्रिशा दवे लिखा था। शैली कुछ पूछे उससे पहले मैडम बोली, "आइ एम सॉरी शैली कि तू खाँसी की वजह से हिस्सा नहीं ले पाएगी, इसलिए मैंने त्रिशा को "सोलो" देना तय किया है।"

स्टाफ रूम से निकली तब शैली बिल्कुल गुमसुम हो गई थी। नूपुर को समझ में नहीं आ रहा था कि वह शैली से क्या कहे। हिम्मत करके वह बोली, "आइ एम सॉरी शैली, उस दिन मैंने "सोलो"वाला पेपर देखा ही नहीं था।"

"नहीं नूपुर, तुझे सॉरी कहने की ज़रूरत नहीं है। मुझे मेरी गलती समझ में आ गई है। "मैं रह गई" ऐसा सोचकर मैंने कितना काल्पनिक दुःख खड़ा कर दिया था।" और फिर वह खाँसते हुए, हँसते-हँसते बोली, "और तू सच ही कह रही थी कि जैसा भाव करोगे वैसा ही वापस मिलेगा।"

इतने में सामने से त्रिशा को आते हुए देखकर फटाफट शैली, त्रिशा के पास दौड़ी और दिल से त्रिशा को बधाई दी।

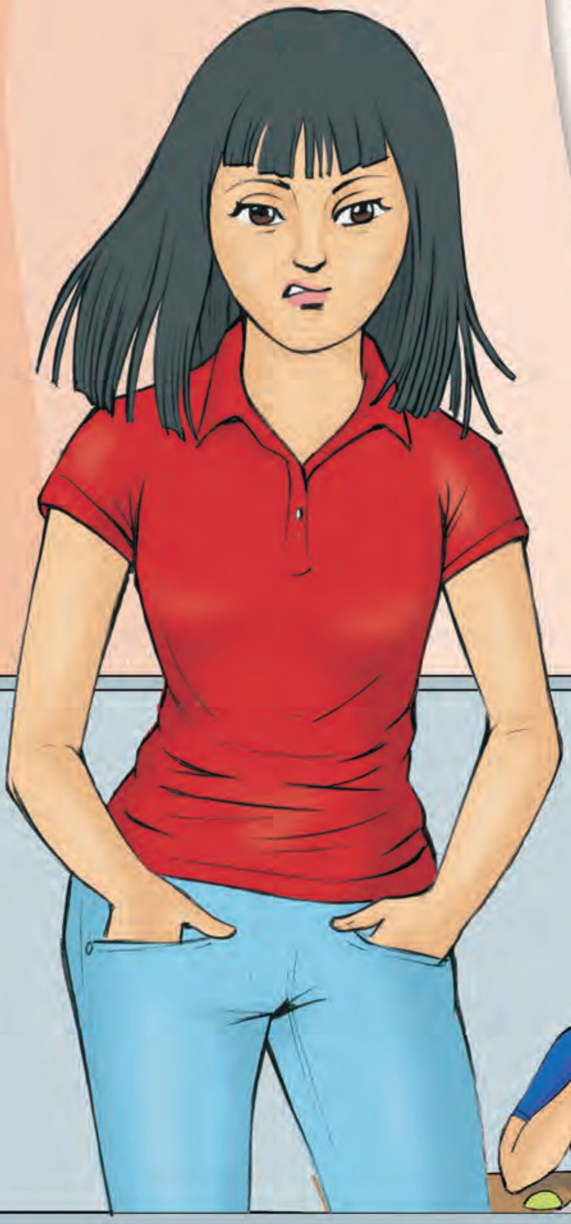

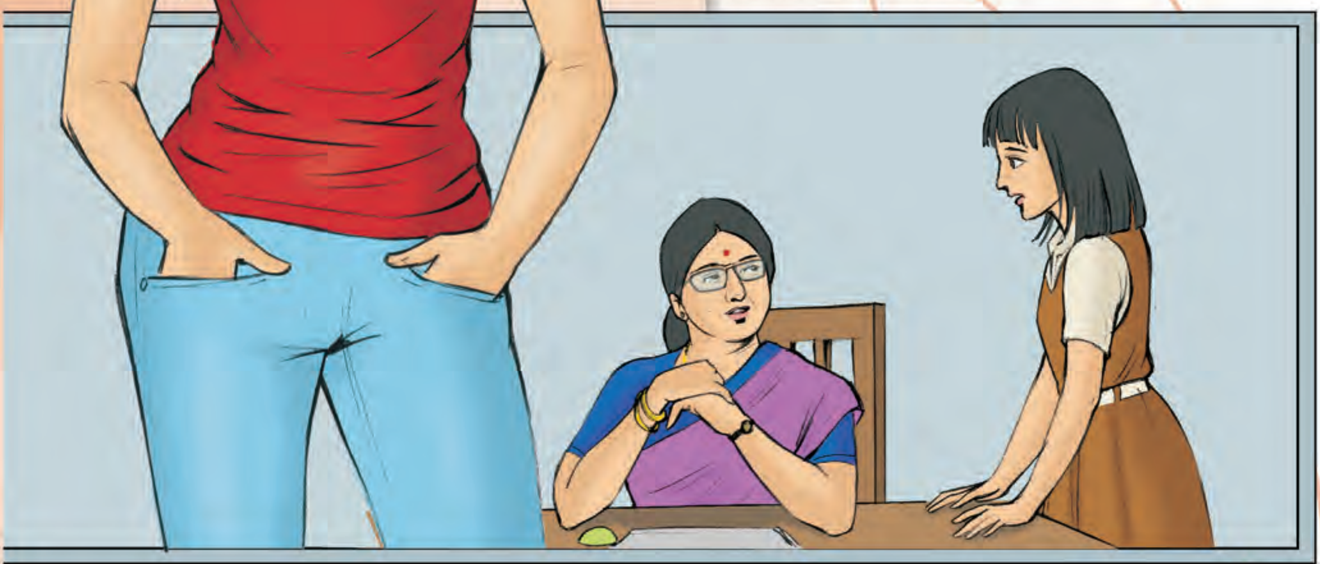

अभय! अभय! अभय!
मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर
११
अक्रम एक्सप्रेस
सितम्बर २०१३
और फिर अभय ने गोल किया! सुपर्ब गोल बाइ अभय!
सचमुच, अभय चैम्पियन है। उससे कोई टक्कर नहीं ले सकता।
सच में!
गेम के बाद,
कॉग्रैचुलेशन "मोस्ट वैल्यूबल (कीमती) प्लेयर" एक बार फिर ट्रॉफी जीतकर तुमने साबित कर दिया कि इस खिताब का सही हकदार सिर्फ तुम ही हो।
थैंक्स।
ग्रेट गेम, अभय! आज फिर से तुमने अपने स्कूल का नाम रोशन किया। अब हम शनिवार को शाम ४ बजे प्रैक्टिस के लिए फिर से मिलेंगे।
ओके सर! थैन्क यू।
शनिवार की शाम को तरंग और रौनक भी अभय की प्रैक्टिस देखने आए। फील्ड में एन्टर होते ही उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट सुनी।
अभय ने गोल किया लगता है।

वहाँ जाकर देखा तो अभय तो नहीं लेकिन कोई दूसरा ही था।
सुपर्ब आरुष। तुम ने बहुत अच्छा खेला!
यह कौन है?
हमारी टीम का नया प्लेयर, आरुष। आज ही टीम में शामिल हुआ है। नया ही है लेकिन अभी से ही कोच और हम सबका दिल जीत लिया है।
ओह रियली?
हाँ, सचमुच, ज़ोरदार खेलता है।
थोड़ी देर बाद,
हाय, आज प्रैक्टिस के लिए लेट हो गया। गेम के बाद आप लोगों से मिलता हूँ।
श्योर!
यार, अभय को नए प्रतिस्पर्धी के बारे में पता चलेगा तो उसे कितना दुःख होगा न!
हाँ, मुझे तो उसकी चिंता हो रही है।

प्रैक्टिस के बाद,
अभय, वह नए प्लेयर आरुष के कारण तुम अपसेट तो नहीं हो न?
अपसेट? मैं क्यों अपसेट होऊँगा?
क्यों? अब टीम में और लोगों में तुम्हारा स्थान नहीं रहेगा, इस बात से तुम्हें डर और असुरक्षित तो महसूस नहीं हो रही है न?
अक्रम एक्सप्रेस सितम्बर २०१३
१३
असुरक्षा? बल्कि मुझे तो सुरक्षित लग रहा है कि अब आरुष के कारण हम अगला गेम ज़रूर जीत पाएँगे। हर गेम में टीम जीते, वही टीम का लक्ष्य होता हैं और अब वह लक्ष्य को पाने के लिए मुझे पार्टनर मिल गया है। मैं तो बहुत खुश हूँ।
फिर तो हरएक सेशन में कोच आरुष को बहुत प्रोत्साहन देने लगे। अभय भी आरुष को प्रोत्साहन देने में शामिल हो जाता। उसे कभी भी ऐसा नहीं लगा कि आरुष कोच का चहेता हो जाएगा और वह रह जाएगा।
फाइनल गेम का दिन था, आज आरुष के नाम का बोलबाला था।
आरुष, आरुष, आरुष ...
और आरुष ने अंतिम गोल किया और टीम जीत गई।

अवॉर्ड समारोह शुरू हुआ।
गेम के "मोस्ट वैल्यूबल प्लेयर" की ट्रॉफी जाती है.... आरुष को।
तालियों की गड़गड़ाहट के बीच आरुष ने ट्रॉफी स्वीकार की।
थैन्क यू। लेकिन इस अवॉर्ड का सही हकदार तो अभय है, वह हमारी टीम का कीमती ही नहीं पर मोस्ट नोबल प्लेयर है। टीम के बेस्ट प्लेयर होते हुए भी अभय ने कभी अपना स्थान बनाए रखने के लिए मेरे साथ स्पर्धा नहीं की। जब से मैं टीम में शामिल हुआ तभी से उसने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया और अच्छा गेम खेलने के लिए टिप्स भी दीं। अभय, स्टेज पर आकर तुम्हारा अवॉर्ड स्वीकार करो।
स्टेज पर अभय और आरुष ने मिलकर प्रेक्षकों के सामने ट्रॉफी दिखाई और एक दूसरे के गले लग गए।

अपने आप को परखकर देखो!

इस अंक में हमने "मैं रह गई!" की समझ प्राप्त की। चलो, अब नीचे दी गई कहानी में से ढूँढो कि डॉली को ऐसा कहाँ-कहाँ हुआ कि "मैं रह गई"? और किस समझ से वह ऐसे नकारात्मक विचारों से बाहर निकली?

"चॉकलेट्स," वह डॉली की सबसे फेवरिट चीज़ और वह भी खास अमरीका की चॉकलेट्स। अब तो डॉली बड़ी हो गई थी, लेकिन अगर चॉकलेट मिलनेवाली हो तो वह अभी भी दौड़ जाती है। इसलिए यह सुनकर कि मौसी अमरीका से आनेवाली हैं वह मौसी से भी ज्यादा, चॉकलेट्स मिलने का इंतज़ार करने लगी।

(A) मौसी तो आ गई लेकिन रात को सोने तक उन्होंने बैग नहीं खोला। डॉली के मन में विचार आने लगे, "इस बार मेरी चॉकलेट्स का क्या हुआ? मौसी ने अभी तक क्यों नहीं दीं?"

(B) सुबह उठकर देखा तो मोन्टू (डॉली का छोटा भाई) सोफे पर बैठा-बैठा चॉकलेट्स खा रहा था, डॉली तो सीधी रसोई में दौड़कर गई और मम्मी से पूछा, "मेरी चॉकलेट्स कहाँ हैं मम्मी?"
"मुझे क्या मालूम? जब मौसी आएँ, तब उनसे पूछना।" मम्मी ने कहा।

(C) डॉली तो बहुत अपसेट हो गई। उसे अंदर घुटन होने लगी। और लगा, "अरेरे! इस बार मुझे चॉकलेट नहीं मिलीं। मैं रह गई और इस बार मोन्टू को चॉकलेट मिल गई। मोन्टू से तो मैं कितनी अच्छी हूँ, फिर भी मैं रह गई और चॉकलेट उसे मिल गई।"

(D) थोड़ी देर के बाद उसने मोन्टू से चॉकलेट माँगी लेकिन मोन्टू ने चॉकलेट देने के लिए साफ मना कर दिया। इसलिए वह ज्यादा अपसेट हो गई और फिर विचारों में खो गई, "अब मैं क्या करूँ? कैसे मोन्टू से चॉकलेट लूँ? मौसी को मोन्टू के लिए ही लानी थी तो दो बॉक्स नहीं ला सकती थी? एक ही क्यों लाई?"

(E) फिर तो उसे मौसी के लिए नेगेटिव विचार आने लगे : कितनी पक्षपाती हैं, हर बार मोन्टू का ही पक्ष लेती हैं, मेरी तो उन्हें फिक्र ही नहीं है। मेरे लिए तो सोचती ही नहीं हैं। मौसी मुझे बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती।"

(F) ऐसे सोचते हुए उसका चेहरा मुरझा गया, इतने में मौसी वहाँ आई और बोलीं, "ओ डॉली, तू उठ गई बेटा? यहाँ आ, देख मैं तेरे लिए क्या लाई हूँ? इस बार सरप्राइज़ है।"

(G) डॉली ने देखा तो मौसी उसके लिए उसका फेवरिट कलर का पार्टी पर्स, मेचिंग शूज़, और जैकट लाईं थीं। मौसी बोलीं, "बेटा, अब तू बड़ी हो गई है न, इसलिए मैं तेरे लिए यह गिफ्ट लाई हूँ। इनमें से कोई भी चीज़ मोन्टू नहीं ले सकेगा। तुझे अच्छी लगीं न।"

(H) गिफ्ट्स देखकर डॉली एकदम झेंप गई। मौसी के गले लगी और बोली, "हाँ मौसी, बहुत अच्छी लगीं। थेंन्क यू!" और फिर वह रूम में भाग गई।

(I) डॉली को पछतावा होने लगा, "मैंने मौसी के लिए कितना नेगेटिव सोचा! यदि मौसी को पता चले कि मैंने उनके लिए ऐसा नेगेटिव सोचा था तो उन्हें कितना दुःख होगा! हर बार मौसी मेरे लिए कितनी सारी चीज़ें लातीं हैं, फिर भी मैं कितनी उतावली हो गई! मैं रह गई, मैं रह गई" ऐसा सोचकर मैंने मौसी के लिए कितना उल्टा सोचा। कितनी गलत बात है....!"

(J) डॉली तुरंत मौसी के पास गई और सबकुछ सही बताकर मौसी से माफी माँगी।

(K) और तय किया कि फिर कभी, "मैं रह गई" ऐसा सोचकर निराश नहीं होऊँगी और किसी का दोष नहीं देखूँगी। मुझे जो मिला है, उसमें ही खुश रहूँगी।

नेगेटिव विचार : ____________________

पलटने के लिए
समझ : ____________________

ऐतिहासिक गौरवगाथा

बारह सौ-तेरह सौ वर्ष पहले चित्रकूट नगर में एक ब्राह्मण रहते थे। उनका नाम था पंडित हरिभद्र। हरिभद्र विद्या में इतने पारंगत थे कि उनकी बराबरी का और कोई न मिले। राजा-महाराजाओं में वे बहुत ही माननीय और आदरणीय थे। राजा और प्रजा दोनों उनकी विद्या से बहुत परिचित थे। सभी उनका आदर करते थे, उनकी विद्या की तारीफ़ करते और शास्त्र का कोई काम पड़ता तो उनसे ही पूछने आते।

कोई महापंडित बनकर सामने आए तो उन्हें वे पराजित करके ही छोड़ते। एक भी विद्या ऐसी नहीं होगी कि जिसमें कोई उन्हें हरा सके या उनके सामने खड़ा रह सके!

धीरे-धीरे उनको ज्ञान के घमंड का रंग चढ़ने लगा। वे सबसे कहने लगे, "तीन लोक में यदि कोई खुद को पंडित मानता हो, तो वह मेरे सामने शास्त्रार्थ करने आ जाए!" देखूँ तो सही कि किसकी मुझे हराने की मंशा है। उसकी इस मंशा को उखाड़ न फेंकू तो मेरा नाम भी हरिभद्र नहीं!

ज्ञान के इस घमंड में उन्होंने मान लिया कि दुनिया के सभी शास्त्रों और विद्याओं के वे जानकार हैं। वह लोगों से कहने लगे, "इस काल में मैं सर्वज्ञ हूँ। एक भी बात मुझसे अनजानी नहीं है!"

उस सर्वज्ञता के गर्व में उन्होंने एक बात तय की : इस दुनिया में ऐसी एक भी वाणी नहीं है कि जो मेरे अधीन नहीं हो इसलिए जिस किसीका भी वचन मैं न समझ सकूँ तो उसका मैं शिष्य बन जाऊँगा!

एक दिन मध्यरात्रि के समय पंडित हरिभद्र मंत्रविधि पूरी करके राजभवन से अपने घर जा रहे थे, उनका मन शास्त्र चिंतन में मग्न था। वे एक धर्म स्थान से गुज़र रहे थे, तभी उनके कान में एक कविता की पंक्ति पड़ी।

गाथा की पंक्ति सुनकर पंडितराज थोड़े हिल गए। पंक्ति का अर्थ उन्हें समझ में नहीं आया। पंडित हरिभद्र उस पंक्ति के अर्थ को समझने में मग्न हो गए, वे गहराईओं में गए, लेकिन उनका शास्त्रज्ञान उस छोटी सी गाथा का अर्थ समझने में निष्फल हुआ। उनका मन अशांत हो गया और चित्त चक्कर में पड़ गया। धीरे-धीरे उस गाथा का अर्थ समझने की जल्दी में उनके खुद के ज्ञान का गर्व पिघलने लगा। जिस ज्ञान का इतना घमंड है, वह ज्ञान इतना सा अर्थ भी नहीं बता सकता तो फिर उस ज्ञान पर घमंड करने का क्या मतलब?

और फिर उन्हें अपनी ही कही हुई बात याद आई, "जिस किसीका भी वचन मैं नहीं समझ सकूँगा तो मैं उसका शिष्य बन जाऊँगा।" उन्हें अपने अंदर की आवाज़ सुनाई दी "पंडितराज! ज्ञान का घमंड तो बहुत किया

"तीन लोक में यदि कोई खुद को पंडित मानता हो, तो वह मेरे सामने शास्त्रार्थ करने आ जाए!"

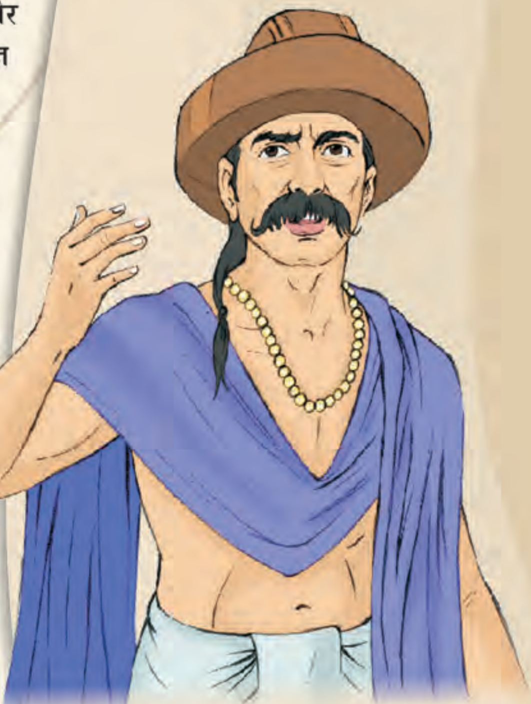

लेकिन अब इस घमंड को दूर करके शिष्य बनने का समय आ गया है!"

उस आवाज़ से प्रेरित होकर पंडितराज विनम्र जिज्ञासु बनकर उस गाथा का पाठ करनेवाली साध्वीजी के पास पहुँच गए। साध्वीजी के मुख पर अनोखा तेज था। हरिभद्र ने विनम्रता से साध्वीजी से विनती की, "माता, आप जो गाथा कुछ समय पहले बोल रही थीं, उसका अर्थ और मर्म मुझे समझाइए!"

साध्वीजी ने कहा, "महानुभाव! ऐसी शास्त्र वाणी का अर्थ समझने के लिए तो आपको हमारे गुरु के पास जाना पड़ेगा। शास्त्र वचन का अर्थ बताने के सच्चे अधिकारी वे ही हैं।"

पंडित हरिभद्र की जिज्ञासा इतनी तीव्र हो गई थी कि उसे रोक पाना मुश्किल था। इसलिए वे तुरंत ही गुरु जिनदत्तसूरजी के पास पहुँच गए और सूरजी से गाथा का मर्म बताने की विनती की।

सूरजी ने कहा "महानुभाव! ऐसा शास्त्रज्ञान तो साधु जीवन स्वीकार करके धर्म की साधना किए बिना नहीं मिल सकता।"

हरिभद्र ने विलंब किए बिना विनम्र भाव से कहा, "तो मुझे इस धर्म की साधना का मार्ग बताइए।" गुरु भी शिष्य की ऐसी जिज्ञासा से प्रसन्न हुए। उन्होंने साध्वीजी से हरिभद्र को अपने धर्मपुत्र की तरह स्वीकार करने की आज्ञा दी और ज्ञान प्राप्ति के लिए वे मुनि हरिभद्र बने और हरिभद्र को धर्मपुत्र की तरह स्वीकार करनेवाली माता का नाम था याकिनी। हरिभद्र ने मन ही मन में धर्ममाता का उपकार माना।

उसके बाद मुनि हरिभद्र अपने अभ्यास में लीन हो गए, कुछ ही समय में मुनि हरिभद्र महाज्ञानी होकर आचार्य हरिभद्र बन गए, लेकिन अब हरिभद्र में ज्ञान का घमंड या विद्या का अभिमान नहीं रहा था। वे तो जैसे-जैसे ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ते गए वैसे-वैसे नम्र, अतिनम्र ओर विनम्र बनते गए। खुद की पहचान के लिए अन्य विशेषण उन्हें अच्छे नहीं लगते थे। किसी समय में "सर्वज्ञ" कहकर खुद का परिचय देनेवाले को खुद की वृत्ति पर हँसी आ रही थी।

अपनी गहरी ज्ञान-साधना और जीवन साधना के बीच भी वह अपनी धर्ममाता याकिनी, गुरु और साध्वीजी का उपकार कभी नहीं भूले। खुद का परिचय वे याकिनी के धर्मपुत्र के रूप में देते थे और खुद के रचे हुए शास्त्रों का श्रेय भी अपनी धर्ममाता को ही देते थे।

धन्य हैं ऐसी धर्ममाता को, धन्य हैं उनके धर्मपुत्र को और धन्य है उनकी कृतज्ञता को!

एक बार पूज्य नीरू माँ ने एक ब्रह्मचारी भाई को किसी काम से लंदन भेजा। जब वे लंदन में थे तब उस दौरान उनका ब्रह्मचर्य दिवस आया। उन्होंने आशीर्वाद लेने के लिए पूज्य नीरू माँ से फोन पर कहा, "नीरू माँ, आज मेरा ब्रह्मचर्य दिवस है, मुझे आशीर्वाद दीजिए।"

पहले तो पूज्य नीरू माँ ने उनसे पूछा, "पहली बार अकेला लंदन गया है तो कुछ दृष्टि या विचार बिगड़ते हैं? किसी लड़की के प्रति आकर्षण होता है?"

उन्होंने जवाब दिया, "नहीं, नहीं होता। अभी तो मुझे जिस काम के लिए भेजा गया है उसीका बहुत उत्साह रहता है, इसलिए मैं उस काम में ही लगा रहता हूँ और महात्माओं के साथ सत्संग की बातें करने में मेरा समय निकल जाता है।"

पूज्य नीरू माँ ने कहा, "चल, आज मैं तेरी विधि हनुमानजी के पास करती हूँ।" नीरू माँ पहले कभी ऐसा नहीं बोलीं थी इसलिए वे तो बहुत खुश हो गए और बोले, "हाँ नीरू माँ, बहुत अच्छा।"

फिर नीरू माँ ने पूछा, "तुझे हनुमानजी से क्या माँगना है?"

उन्होंने कहा, "ब्रह्मचर्य।"

पूज्य नीरु माँ बोली, "ब्रह्मचर्य तो माँगना ही है लेकिन आज तू हनुमानजी से खास तौर पर स्वामी भक्ति माँगना।"

यह सुनकर उनकी आँखों में से आँसू निकल पड़े। तभी नीरू माँ ने प्रेम से कहा, "तेरे अंदर इसकी कमी है न, हनुमानजी की राम भगवान के प्रति जैसी भक्ति थी वैसी ही भक्ति तुझे ज्ञानी के प्रति होनी चाहिए।"

उन्हें नीरू माँ के लिए अहो! अहो! अहो! हो गया। सामने से कमी दिखाकर, पूर्ण कर देने की ज्ञानी की करूणा के सामने उनका मस्तक परम विनय से झुक गया!!

Akram Express

September 2013
Year : 1, Issue : 6
Conti. Issue No.:6

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

पूज्यश्री के साथ सीमंधर सिटी में रक्षाबंधन महोत्सव

अक्रम एक्सप्रेस के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.